# इकाई 5 भाषा अर्जन के सिद्धांत

## इकाई की रूपरेखा

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देष्य

5.2 भाषा अधिगम क्या है?

5.3 भाषा अर्जन क्या है?

5.4 भाषा विकास की प्रक्रिया

5.5 व्यगोत्सकी और भाषा अर्जन

5.6 सारांष

5.7 बोध प्रष्नों के उत्तर

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

## 5.0 प्रस्तावना

काफी लम्बे समय से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से भाषा षिक्षण को भाषा अधिगम नहीं माना जाता था। यह माना जाता था कि अध्यापक भाषा पढ़ाता है और विद्यार्थी भाषा सीखता है। अध्यापक जो कुछ भी विद्यार्थी को "देता है", विद्यार्थी उसे ग्रहण करता है और भाषा अभिव्यक्ति के रूप में इसे व्यक्त करता है। ऐसा बीसवीं सदी में मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान तथा जीव विज्ञान के क्षेत्रों में चिंतन की वृद्धि के साथ, भाषा अधिगम में वे

अंतर्दृष्टियाँ विकसित हुई, जिन्होंने भाषा की प्रकृति तथा अधिगम की प्रकृति दोनों में प्रगामी रूप से बेहतर समझ निर्मित की।

इस इकाई में हम पहले अधिगम पर विभिन्न विचारों और बाद में भाषा विकास के अर्जन तथा भाषा विकास के अर्जन पर परवर्ती विचारों के चरम बिन्दु पर पहुँचने पर विचार करेंगे। हम उन मुख्य विद्वानों का उल्लेख करेंगे, जिन्होंने इस क्षेत्र में अनुसंधान किया है।

## 5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपः

- उन विभिन्न तरीकों को समझ सकेंगे जिनसे विद्यार्थी भाषा सीखता और अर्जित करता है;
- स्पष्ट कर सकेंगे कि भाषा अधिगम कैसे होता है और भाषा, अवस्थाओं में कैसे विकास करती है तथा बढ़ती है; और
- भाषा अधिगम और विकास के मुख्य सिद्धांतों की चर्चा करेंगे।

## 5.2 भाषा अधिगम क्या है?

इस प्रश्न को समझने की एक विधि यह है कि अधिगम के सभी प्रकारों के समान ही भाषा अधिगम को भी माना जाता है। कुछ भी सीखना, व्यवहार अभिरचना में परिवर्तन के

रूप में माना जा सकता है ताकि मनुष्य कुछ भी कर सके, चाहे यह घूमना फिरना है, या साइकिल पर सवार होना या जूते के फीते बाँधना, या बोलना। चूँकि अन्य व्यक्तियों से सम्प्रेषण (बातचीत) करने की आवष्यकता प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवष्यकता है। भाषा कैसे बोलते हैं, यह सीखना मानव व्यवहार का महत्वपूर्ण पक्ष है। इससे यह समझना अधिक आसान हो जाता है, कि मानव भाषा कैसे सीखता है जब हम मन की आंतरिक अवस्थाओं या अभिवृत्ति (जिनका प्रेक्षण हम नहीं कर सकते हैं) के स्थान पर व्यवहार का प्रेक्षण करते हैं।

परिवेष सभी प्रकार के व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, चाहे या मौखिक (वाचिक) हो या अमौखिक (अवाचिक)। मनुष्यों और पषुओं की ज्ञानेन्द्रियाँ बाहरी जगत से बहुत प्रकार के **उद्दीपन** प्राप्त करने के लिए अनुकूलित हैं। ये ऐसी अनुक्रियाएँ करते हैं, जो कभी–कभी अनजाने (अनिच्छा) में हो सकती हैं जैसे कि **प्रतिवर्ती क्रिया** (जैसे भोजन देखने पर लार आना, या घुटने में झटका आना या पलकें झपकना) या यह **स्वैच्छिक** भी हो सकती है अर्थात् जीव संचेतन रूप से अनुक्रिया करता है। ज्ञानेन्द्रियों के बीच सम्बन्ध होता है। एक षिषु बोलते समय अपनी माता के होठों का चलना देखता है और ध्वनि भी सुनता है। वह उसी ध्वनि को निकालने के लिए उसी प्रकार अपने होठ हिलाता है। इस प्रकार **मूलभूत अनुकरण** अधिगम का एक रूप हो जाता है। तब वैसी ही ध्वनि वैसे ही संचालनों के साथ सुनाई देती है और इसी विधि को बार–बार दोहराया जाता है। इस प्रकार व्यवहार **पुनर्बलित** होता है। यह प्रेक्षण योग्य और पूर्वानुमान लगाने योग्य व्यवहार प्रतिमान बनाता है। प्रारंभ से ही आदतों का एक समूह (समुच्चय) बन

जाता है। जब बहुत–सी ध्वनियाँ सुनी जाती हैं और दोहराई जाती हैं, वे वाक् ध्वनियों का समुच्चय बनाते हैं जो भाषा अधिगम का पहला सोपान है।

उद्दीपन–अनुक्रिया (**stimulus-response**) के अनुक्रम (समीकरण S > R के रूप में निरूपित) उस अधिगम के स्पष्टीकरण का आधार बनते हैं जो **व्यवहारवादी मनोविज्ञान सिद्धांत** द्वारा दिए गए हैं।

## अनुकूलन के रूप में अधिगम

रूसी मनोविज्ञानी, पावलोव **अनुकूलित अनुक्रिया** (**conditioned response** या CR) सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। यह सिद्धांत, उद्दीपनों के प्रति विषिष्ट रूप से अनुक्रिया करने के लिए स्वाभाविक प्रवृत्तियों के दोहन करने की संभावना से उत्पन्न होता है, उद्दीपन कुछ भी हो सकता है जो प्रेक्षणीय व्यवहार की अनुक्रिया स्पष्ट करता है या उत्पन्न करता है। भोजन देखने पर कुत्ते की लार टपकना, घुटने के नीचे थपकी देने पर अनुक्रिया में घुटने का प्रतिक्षेप या प्रकाष की चमक की अनुक्रिया में पलक झपकना, सभी स्वाभाविक अनुक्रियाएँ हैं जो बिना पूर्व अधिगम के होती हैं। इन्हें जन्मजात या स्वाभाविक होने के कारण **अननुकूलित अनुक्रिया (Unconditioned response - UR)** कहा जाता है।

शास्त्रीय अनुकूलन सिद्धांत के अनुसार, यदि दूसरा उद्दीपक बार–बार अनानुकूलित उद्दीपक (प्राकृतिक उद्दीपक) के ठीक पहले या साथ–साथ प्रस्तुत किया जाता है, तब यह दूसरा उद्दीपक शीघ्र ही समान अनुक्रिया को प्राप्त करने आता है। इस दूसरे उद्दीपक को इसी कारण **अनुकूलित उद्दीपक** (**conditioned stimulus** - CS) कहा जाता है क्योंकि

इसके लिए जीव की अनुक्रिया को अनुकूलित या अधिगमित किए जाने की आवष्यकता होती है।

पावलोव के प्रसिद्ध प्रयोग में एक कुत्ते को भोजन दिया गया और उसने लार टपकाकर (UR) अनुक्रिया की थी। तब प्रत्येक बार जब भोजन दिया जाता था, घंटी (CS) बजाई जाती थी। धीरे–धीरे घंटी बजने से लार टपकाने की अनुक्रिया होने लगी। आरेखी ढंग से इसे निम्न प्रकार निरूपित किया जा सकता है:

| **उद्दीपक** | **अनुक्रिया** |
|---|---|
| भोजन (अननुकूलित) | लार बहना |
| घंटी + भोजन | लार बहना |
| घंटी (अनुकूलित) | लार बहना |

एक अन्य व्यवहारवादी, **बी.एफ. स्किनर** ने यह दिखाने के लिए चूहों पर प्रयोग किया कि अनुक्रियाएँ सीधे उद्दीपन के दिए बिना भी हो सकती हैं और परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन होता है।

उनके प्रयोग में, एक चूहा उत्तोलकयुक्त अंधेरे बॉक्स में रखा गया। प्रत्येक बार जब भी उत्तोलक (लीवर) उठाया जाता था, खाने की गोलियाँ गिरती थी। प्रारंभ में चूहा जब वह बॉक्स के इर्द–गिर्द जाता है, उत्तोलक को संयोग से दबाता है। जब वह अनुभव करता है कि उत्तोलक दबाने पर उसे भोजन मिलता है, वह उत्तोलक दबाना सीखता है और इस प्रकार भोजन प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए, अब जब चूहा उत्तोलक दबाता है,

इसमें अनुक्रिया या **क्रिया प्रसूत** परिवेष की अवस्था बदल गई है। क्रिया प्रसूत अनुकूलन प्रक्रिया का उद्देष्य केवल अनुक्रिया की आवृत्ति बढ़ाना है – इसलिए चूहा बहुधा "बार–बार" उत्तोलक दबाता है। पषु के व्यवहार के इस प्ररूप के आधार पर स्किनर ने **पुनर्बलन** की परिभाषा दी। यदि कोई क्रिया बार–बार सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम देती है, तो इस क्रिया के आवर्तन या अनावर्तन की संभावना बढ़ती है। स्किनर ने उस स्थिति को **सकारात्मक पुनर्बलन** कहा, जब क्रिया की आवृत्ति बार–बार हो और **नकारात्मक पुनर्बलन** कहा, जब क्रिया की पुनरावृत्ति न हो।

अनुक्रियावादी या शास्त्रीय अनुकूलन में उद्दीपन से पुनर्बलन संबद्ध होता है। दूसरी ओर, क्रियाप्रसूत अनुकूलन में पुनर्बलन, अनुक्रिया से संबद्ध होता है। जब क्रियाप्रसूत, स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है, तो इस प्रतिफल, अर्थात स्वाभाविक रूप से उत्पन्न वांछित व्यवहार को पुनर्बलित किया जाता है।

जब वह भूखा होता है तो षिषु का रुदन माता को उसे दूध पिलाने के लिए उद्दीपित करता है। कुछ समय बाद यह व्यवहार पुनर्बलित हो जाता है और यही अनुक्रिया उन अन्य वस्तुओं के लिए भी प्रयुक्त होती है, जिन्हे बच्चा चाहता है। पहला उद्दीपन षिषु की भूख है, जिसकी अनुक्रिया रुदन में होती है। बच्चे का रुदन माता के लिए उद्दीपक है, जिसकी अनुक्रिया दूध पिलाना है। निस्संदेह, पहली उद्दीपक–अनुक्रिया अभिरचनाएँ, स्वाभाविक प्रवृत्ति आवष्यकताओं की संतुष्टि पर आधारित होती है, जैसे भूख या गरमाहट। जैसे–जैसे इच्छाएँ बढ़ती है, षिषु भी अन्य अनुक्रियाओं, जैसे भाव–भंगिमाओं का प्रयोग करने लगता है। ये वांछित अनुक्रियाओं को प्रकट करते हैं और अभिरचना

पुनर्बलित हो जाती है, परंतु यदि वांछित अनुक्रिया प्राप्त नहीं होती है तो पुनर्बलन दुर्बल पड़ जाता है या नकारात्मक हो जाता है, अर्थात् व्यवहार संबंधी अभिरचना (पैटर्न) नहीं बनेगी। इसलिए, पुरस्कार के माध्यम से पुनर्बलन की अभिरचना इस बात का महत्वपूर्ण पहलू है कि परिवेष संबंधी दषाएँ, व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है?

भाषाविद् **ब्लूमफील्ड** ने, जो व्यवहारवादी भी थे, भाषा के संदर्भ में इस प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। भाषा अधिगम भी उद्दीपन और अनुक्रिया की अभिरचना है। ब्लूमफील्ड ने सुझाव दिया है कि बाह्य जगत से उद्दीपन (S), क्रिया के रूप में अनुक्रिया (R) प्राप्त करता है, अर्थात् यदि व्यक्ति भूखा है और सेब देखता है, यह उद्दीपन 'S' है। यदि तब व्यक्ति सेब लेता है उसे खाता है, यह अनुक्रिया 'R' है। परंतु यदि व्यक्ति कहता है, मैं भूखा हूँ, मैं सेब चाहता हूँ तो यह उद्दीपन 'S' की **वाक् अनुक्रिया** 'r' है। यह दूसरे व्यक्ति के लिए भी **वाचिक उद्दीपन 's' हो सकता है**, जो सेब 'R' पाने के लिए क्रिया द्वारा अनुक्रिया कर सकता है या वाचिक 'r' द्वारा अनुक्रिया कर सकता है। यह अभिरचना $s > R$ या $s > r$ होगी। इस प्रकार वाक् उद्दीपक क्रिया को प्रतिस्थापित करने वाला प्रतिस्थानी उद्दीपक है परंतु वे भी समान रूप से व्यवहार को प्रतिस्थापित करते हैं। पुनरावृत्ति और पुनर्बलन के माध्यम से अन्य प्रकार के व्यवहारों की भाँति वाचिक व्यवहार भी आदत निर्माण के लिए उद्दीपन और अनुक्रिया की अभिरचना का अनुसरण करता है।

काफी सीमा तक, यह भाषा–अधिगम को समझने के लिए उपयोगी है। भौतिक और सामाजिक परिवेष उद्दीपन और अधिगम की अभिरचना की गति तीव्र करने में बड़ी भूमिका निभाता है। विद्यार्थी के तात्कालिक परिवेष में उच्चारित बहुत–सी वाक ध्वनियाँ, अन्यों से

प्रोत्साहित अनुक्रिया स्पष्ट करने के लिए विद्यार्थी द्वारा प्रेक्षित की जाती हैं। जब विद्यार्थी उसी ध्वनि की नकल करता है और उसी प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करता है और समान प्रकार का प्रोत्साहन प्राप्त करता है, तो अभिरचना पुनर्बलित होती है। प्रोत्साहन, बहुधा वास्तविक प्रतिफल या प्रोत्साहित वाक् के रूप में होता है। निस्संदेह "माता–पिता के चेहरे पर प्रसन्नता झलकती है, जब षिषु पहली बार "पापा" या "माँ" बोलता है, यह अनुक्रिया वास्तव में बच्चे के लिए बहुमूल्य है क्योंकि यहाँ वाक् और मातापिता की स्वीकृति के बीच साहचर्य का पुनर्बलन होता है जो बदले में माता–पिता का ध्यान अधिक आकर्षित करेगा और बच्चा भी आष्वस्त होगा कि यह व्यवहार उसके प्रति अन्य लोगों तथा उसके आस–पास के संसार के व्यवहार में भी परिवर्तन ला सकता है।

अधिगम अनुकूलन है। क्या यह सचेतन है? क्या हम कह सकते हैं कि पुनरावृत्तिक व्यवहार सचेतन है या केवल आदत चालित है? यदि कोई व्यक्ति दिए गए पुनर्बलन के लिए एक जैसी अनुक्रिया लगातार दोहराता है, वह व्यक्ति उन शब्दों या वाक्यों को बोलने को कैसे नियंत्रित करता है जो उसने पहले कभी नहीं सुने? संभवतः सरल उद्दीपन–अनुक्रिया अभिरचना, अभिगम की प्रारंभिक अवस्था में प्रतिफल और प्रोत्साहन को महत्व देकर कार्य करती है परंतु क्या अधिगम सभी समय यांत्रिक नहीं रहता है। क्या यह बच्चों और वयस्कों में अलग–अलग होता है? क्या  यह बच्चों और वयस्कों में अलग–अलग होता है? क्या दूसरी भाषा सीखते समय अधिगम वैसा ही रहता है जैसाकि पहली भाषा सीखते समय?

भाषाओं को अनुकूलित व्यवहार के रूप में स्पष्ट करना, इन सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं हो सकता है क्योंकि मनुष्यों में भाषा, पषु व्यवहार की अपेक्षा बहुत अधिक जटिल होती है।

---

**बोध प्रश्न 1**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) पाठ में से ऐसे संकेत शब्द लें जो व्यवहारवादी का दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

..............................................................................................................................

..............................................................................................................................

..............................................................................................................................

..............................................................................................................................

2) निम्नलिखित में से कौन–सा विचार ऊपर दिए गए विचारों के अनुरूप है। सही कथन पर सही (√) का निषान लगाए।

i) विद्यार्थी अनुकरण से सीखते हैं जो वे उद्दीपन के रूप में प्राप्त करते हैं।

ii) उद्दीपक का पुनर्बलन अनुकूलन है।

iii) अनुकूलन से व्यवहार में परिवर्तन नहीं आता।

iv) वाक उद्दीपन व्यवहार के रूप में होते हैं।

v) अधिगम पुरस्कार और दंड पर निर्भर करता है।

## 5.3 भाषा अर्जन क्या है?

**अर्जन** ऐसा शब्द है जिसे उस **अधिगम,** जो औपचारिक तरीके में होता है, जब विद्यार्थी इस बारे में सचेत रहता है कि उसने क्या सीखना है और **ऐसी स्थिति**, जहाँ विद्यार्थी इस बारे में सचेत नहीं रहता है कि उसे क्या सीखना है, के बीच अंतर करने के लिए व्यक्त किया जाता है। इस संबंध में व्याकरण का उदाहरण लेते हैं। विद्यार्थी को व्याकरण के नियमों के बारे में सचेत बनाया जा सकता है और कहा जा सकता है कि इन्हें सीखना तथा कंठस्थ करना अति आवष्यक है। यह सामान्यतः औपचारिक संदर्भों में (जैसे कक्षा) ही में होता है। दूसरी ओर, भाषा प्रयोग करते समय, सामान्यतः अनौपचारिक रूप से नियमों के बारे में बताए बिना, या उनकी ओर ध्यान आकर्षित किए बिना, विद्यार्थी व्याकरण के नियम समझ सकता है। यह स्वाभाविक रूप से होता है, इसलिए इसे अधिगम की अपेक्षा अर्जन कहना अधिक अच्छा है।

भाषा अर्जन की समझ उस विचार से प्रारंभ हुई जो अनुकूलित अधिगम के रूप में भाषा के व्यवहारवादी दृष्टिकोण से बहुत भिन्न था। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि एक प्रष्न उठा कि जिसका उत्तर यह विचार नहीं दे सका है, कि विद्यार्थी वह भाषा बोलना आरंभ करता है जिसे उसने पहले कभी नहीं सुना या इसके लिए न ही उसने कोई उद्दीपन प्राप्त किया। **नोम चॉमस्की (Noam Chomsky)** ने यह स्पष्टीकरण दिया कि मनुष्यों में भाषा अर्जन के लिए जन्मजात क्षमता होती है जिसके माध्यम से वे असंख्य अभिव्यक्तियाँ कर सकते हैं। यद्यपि, परिवेष विद्यार्थी को अलग–अलग शब्दों की ध्वनि

और रूपों के बारे में जानकारी देता है, परंतु विद्यार्थी परिवेष से संरचनाओं के जटिल ज्ञान का निर्माण नहीं कर सकते हैं। यह ज्ञान उन्हें प्रकृति द्वारा दिया जाता है, नियम, जो भाषा नियंत्रित करते हैं, जैविक दृष्टि से आधारित मानव भाषा क्षमता का भाग है। इसे **भाषा अर्जन युक्ति (Language Acquisition Device - LAD)** कहा जाता है। यह अवचेतन स्तर पर कार्य करती है, तथा मानव भाषा की प्रकृति व संरचना का आधारभूत ज्ञान इसमें सम्मिलित होता है, जो सार्वभौविक हो सकता है। इसकी सहायता से विद्यार्थी भाषा के बारे में परिकल्पना निर्मित करता है और इसका उन जानकारियों के संदर्भ में परीक्षण करता है, जिन्हें वह प्राप्त करता है। चॉमस्की ने इसे **क्षमता** (**Competence**) रहा है जो नियमों का आंतरिक ज्ञान है और **निष्पादन** (**performance**) से इसका विभेद करता है, जो वाक् या लेखन में ज्ञान का प्रयोग है।

भाषा अर्जन के बारे में ये विचार ऐसे बाह्य व्यवहार के रूप में भाषा अधिगम के विपरीत **मानसवाद** (**mentalism**) कहलाए जाने लगे, जिन पर व्यवहारवादियों ने बल दिया था। भाषा अर्जन के महत्वपूर्ण पहलुओं में कुछ है कि यह लम्बे समय तक चलता है, जिनमें भाषा अनुकरण के माध्यम से विकसित न होकर विद्यार्थी द्वारा नियम–निर्माण की आंतरिक प्रक्रिया के माध्यम से होती है। यह उन विचलनों के माध्यम से दिखाई देता है जो हम बच्चों की भाषा में पाते हैं। यदि बच्चों में भाषा अधिगम अनुकरण के रूप होता, तो बच्चे की भाषा ठीक वैसे ही होती, जैसे वयस्क की होती है। परंतु ऐसा नहीं है। इसका अर्थ है कि बच्चा भाषा अर्जन में आंतरिक पथ का अनुसरण कर रहा है। इसके अतिरिक्त, ये विचलन क्रमबद्ध होते हुए पाए गए हैं। हम उन्हें अर्जन प्रक्रिया के भाग के रूप में देख सकते हैं।

इसके कुछ उदाहरण हैंः जब वे अंग्रेजी भाषा का अर्जन करते हैं, तो बच्चे भूतकाल के नियमित नियमों का प्रयोग करते हैं जैसे, tell*ed*, go*ed* आदि, न कि जो वयस्क बोलते हैं जैसे told, went आदि। यह दर्षाता है कि बच्चे इन क्रियाओं के नियमित रूप से अनियमित रूप के स्थान पर सामान्य रूप मान लेते हैं, अर्थात् वे मान रहे हैं कि भूतकाल दर्षाने के लिए सभी क्रियाओं के अंत में ed लगाना होगा। वास्तविकता यह है कि अधिकांष बच्चे प्रारंभिक अवस्था में अंग्रेजी के अर्जन में यही सामान्यीकरण बनाते हैं, इससे सिद्ध होता है कि यह क्रमबद्ध है। इसी प्रकार, बहुवचन भी अति सामान्यीकृत है जैसे mouses, mans आदि। यद्यपि वयस्क बहुत से प्रकार्यात्मक शब्दों जैसे – articles का प्रयोग करते हैं। बच्चे अर्जन की प्रारंभिक अवस्थाओं में उन्हें प्रयोग नहीं करते हैं। यह निर्णायक रूप से सिद्ध करता है कि अर्जन, परिकल्पना–निर्माण, विचलन और नियम रचना के पथ का अनुसरण करता है जो एक मानसिक योग्यता है, अनुकरणात्मक व्यवहार नहीं।

---

**बोध प्रष्न**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) बच्चों और वयस्कों की भाषा में पाए जाने वाले कुछ विचलनों के बारे में सोचे और अपना उत्तर दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

2) भाषा अर्जन युक्ति (LAD) क्या है? इससे क्या परिलक्षित होता है?

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

......................................................................................................................................

## 5.4 भाषा विकास की प्रक्रिया

यद्यपि ऊपर दिए गए स्पष्टीकरण द्वारा भाषा के अधिगम के बारे में कुछ समझा जा सकता है परंतु भाषा विकास की प्रक्रिया को आगे समझना आवष्यक है। यह स्पष्ट है कि भाषा अर्जन जन्म के समय नहीं होता है, वरन् बच्चे के बाह्य जगत और आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं के बीच **अन्तःक्रिया के विकास** के माध्यम से होता है।

पहले, सीखने वाले के मन में संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ चल रही होती हैं। मनोविज्ञानी **पियाजे** ने विकासात्मक अवस्थाओं को उसी तरह स्पष्ट किया जिसमें बच्चे की तर्कसंगत विवेचन और अन्य संकल्पनात्मक क्षमताएँ अंतर्निहित होती है। ये बच्चे में भाषा प्रयोग में दिखाई देते हैं और वे बच्चे को भाषा में संरचना खोजने योग्य बनाते हैं, जिसे वह परिवेष

से प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त, एक अन्य मनोविज्ञानी, व्यगोत्सकी ने विवेचन किया है कि ये क्षमताएँ लगातार विस्तरित होती रहती हैं और जानकारियों को रूपांतरित करती हैं तथा पहले से अर्जित भाषा द्वारा विस्तारित होती हैं। इस प्रकार संज्ञानात्मक, सामाजिक और भाषा अर्जन कौषल साथ–साथ विकसित होते हैं।

पियाजे ने बच्चे और उसके परिवेष के बीच अंतःक्रिया में निम्नलिखित अवस्थाओं पर विचार किया। **आत्मसात्करण अवस्था**, जब बच्चा परिवेष से उद्दीपन ग्रहण करता है और पहले ही अर्जित अनुक्रियाओं के रूप में अनुक्रिया करता है, तब अनुक्रियाओं की नई अभिरचनाएँ विकसित करने के लिए वह अपने स्वयं के विचारों को पुनर्गठित करता है। पियाजे ने जिसे बच्चे के संज्ञान में पुरानी और नई रूपरेखा कहा है, यह उनके बीच एक अंतःक्रिया है।

इसके बाद पियाजे अगली अवस्था का वर्णन करते हैं, जो **समायोजन** की है। जिसमें रूपरेखा अधिक पूरी तरह से पुनर्गठित हो जाती है। उनके अनुसार, जिस अवस्था से बच्चा जन्म से लगभग 24 महीने तक अपने संज्ञानात्मक विकास में गुजरता है, वह **संवेदी प्रेरक** है, जब बच्चा अपने परिवेष से क्रिया करता है, स्पर्ष कर और देखकर, अपने परिवेष से भिन्न–भिन्न वस्तुएँ आत्मसात करके समझता है। वे इस अवस्था में अमूर्त संकल्पनाओं से व्यवहार करने की स्थिति में नहीं होते हैं। फिर, **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था** में दो से सात वर्ष की आयु तक बच्चा प्रतीकात्मकता विकसित करता है और अवधारणाओं से परिचित होता है जैसे संख्या, समय, श्रेणियाँ और दृष्टव्य जटिलताएँ। इस अवस्था में वे प्रतिबिम्बों, चित्रकारी और रंग भरना तथा अक्षरों को समझ सकते हैं।

अगली अवस्था, **मूर्त संक्रियात्मक अवस्था** (सात से ग्यारह वर्ष) में बच्चा बहुत सी मानसिक प्रक्रियाएँ कर सकता है और संकल्पना करने में सक्षम होता है। **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था** (ग्यारह वर्ष और बाद में) में, वे परिणाम निकालना, निगमन, और निरपेक्ष अवधारणाओं को समझ सकते हैं। ये विकास सामान्यतः भाषा अर्जन से संबंधित और उसमें लक्षित होते हैं, यद्यपि अवस्थाएँ ठीक–ठीक समानांतर नहीं होती है। यह काफी हद तक व्यक्तिगत क्षमताओं पर और उन जानकारियों के प्रकार पर निर्भर करता है जो समाज और परिवेष द्वारा प्रदान की जाती हैं।

उपर्युक्त का अनुसरण करते हुए यह कहा जा सकता है कि एक अर्जन क्रम होता हैः पहले छोटी और सरलीकृत संरचनाएँ समझी और अर्जित की जाती हैं और तब संकेतों (कूटभाषा) का विस्तार होता है। स्लोबिन द्वारा किए गए अनुसंधान का परिणाम "अर्जन सिद्धांतों" अथवा "प्रचालन सिद्धांतों" के निर्माण में निम्न प्रकार हैः

i) **अर्थ**

**बच्चा अंतर्निहित अर्थ के लिए स्पष्ट संकेत ढूँढ़ता है।** लघुकृत या संपीडित रूप से पहले पूरा रूप यह दिखाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, कि बच्चे के लिए पूरा अर्थ महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ, बच्चा "उसने जो पुस्तक पढ़ी" के स्थान पर "वह पुस्तक–जो उसने पढ़ी" या 'Id' के स्थान पर 'I would' कहने को प्राथमिकता देता है।

ii) **रूपांतरण (मॉडिफिकेषन)**

**बच्चे शब्दों के रूप में परिवर्तन को खोजते हैं:** बच्चे मानते हैं कि शब्दों को उसके अर्थों में परिवर्तन लाने के लिए प्रणालीबद्ध तरीके से रूपांतरित किया जाता है। यह देखने के लिए एक परीक्षण किया गया था कि अंग्रेजी भाषा का अर्जन करने वाले बच्चे तब क्या करते हैं जब उन्हें दो शब्द 'Wug' और 'gutch' दिए गए जो दो पषुओं के चित्रों के संकेत दे रहे थे। जब पहला चित्र दिखाया गया, बच्चों ने कहा, 'wugs' जबकि उन्हें जब दूसरा दिखाया गया, उन्होंने कहा "gutches"। यह एक जागरूकता दर्षाता है कि वे उन सिद्धांतों को समझ सकते हैं जिन पर दो शब्दों को रूपान्तरित किया जा रहा था। यद्यपि वे सामान्यीकरण कर सकते हैं, जब उनका नियम के अपवादों से सामना होता है। इसलिए वे सभी एक–समान दिखाई देने वाले शब्दों house, mouse, louse, आदि पर 'es' जोड़ सकते हैं।

iii) **क्रम (आर्डर)**

**बच्चे शब्दों, प्रत्ययों, उपसर्गों का क्रम ढूँढ़ते हैं,** बच्चे सुसंगति का अनुसरण करते हैं कि शब्दों में, शब्दों के भागों का क्रम और वाक्यों में, शब्दों का क्रम है। बच्चे अंग्रेजी सीखने की विकास अवस्था में तत्वों जैसे *ed, talk, toy, the* को विरले ही गलत जगह रखते हैं। वास्तव में वे articles बाद की अवस्था में अर्जित कर सकते हैं, इसलिए पिछली अवस्था में वे *toy* के बदले *the toy* कह सकते हैं परंतु वे *toy the* के रूप में इसे अर्जित नहीं करेंगे।

## 5.5 व्यगोत्सकी और भाषा अर्जन

जहाँ चॉमस्की और पियाजे ने मुख्यतः संज्ञानात्मक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित किया, वहीं अन्य आयाम व्यगोत्सकी द्वारा जोड़ा गया।

व्यगोत्सकी के अनुसार, भाषा सहित सभी आधारभूत संज्ञानात्मक क्रियाकलाप सामाजिक इतिहास की संरचना (मैट्रिक्स) में होते हैं। उनका विष्वास है कि संज्ञानात्मक प्रवीणता और सोचने के प्रतिमान स्वाभाविक कारकों द्वारा निर्धारित नहीं किए जाते हैं, बल्कि उन वैयक्तिक और सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के बीच अंतःक्रिया का प्रतिफल है, जहाँ व्यक्ति विकास करता है। परिणामतः उस समाज का इतिहास, जिसमें बच्चे का पालन पोषण हुआ है और बच्चे का व्यक्तिगत इतिहास, उस तरीके महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है जिनमें व्यक्ति सोच सकता है (मुर्रे थामस, 1993)।

व्यगोत्सकी के सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण तत्व "**समीपस्थ विकास क्षेत्र**" है। समस्याएँ स्वयं हल करने की एक बच्चे की क्षमता और दूसरे की सहायता से उन्हें हल करने की क्षमता के बीच अंतर ही **समीपस्थ विकास क्षेत्र** है। **वास्तविक विकास स्तर** का संबंध उन सभी प्रकार्यों तथा कार्यकलापों से है, जिन्हें बच्चा किसी अन्य की सहायता के बिना स्वतंत्र रूप से स्वयं कर सकता है। परंतु समीपस्थ विकास के क्षेत्र में वे सभी प्रकार्य और कार्यकलाप शामिल हैं जिन्हें बच्चा केवल किसी अन्य की सहायता से ही कर सकता है। वह व्यक्ति जो बच्चे की सहायता करता है, कोई भी वयस्क हो सकता है, या समकक्ष बच्चा भी हो सकता है। व्यगोत्सकी के समीपस्थ विकास के क्षेत्र के सिद्धांत के भाषा अध्यापकों के लिए कई निहितार्थ है। उनमें से एक यह है कि विद्यार्थी का सामाजिक

परिवेष यह निर्धारित करने में भूमिका निभाता है कि बच्चा सोचना कैसे सीखेगा? क्योंकि उसके अनुसार विचार और भाषा अंतःसंबंधित हैं।

व्यगोत्सकी का मत है कि अधिगम की एक महत्वपूर्ण विषेषता यह है कि यह विभिन्न प्रकार की आंतरिक प्रक्रियाओं को जागृत करता है, जो केवल तभी कर सकते हैं जब बच्चा अपने परिवेष में लोगों से अन्तःक्रिया करता है और अपने समकक्षियों से सहयोग करता है।

इसलिए, जब यह भाषा अधिगम के लिए प्रयुक्त होती है, तब परिवेष की प्रमाणिकता और उसके सहभागियों के बीच घनिष्ठता अनिवार्य तत्व है जिससे कि विद्यार्थी स्वयं को इस परिवेष का अंग अनुभव करें। ये तत्व परंपरागत कक्षा में बहुत कम प्रबल होते हैं। (स्रोत : http://www.sk.com.br/sk-vygot.html)

## बोधगम्य जानकारियाँ (Comprehensible Input)

यद्यपि व्यगोत्सकी और क्रेषेन (नीचे पढ़िए) पूर्णतः भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं, फिर भी द्वितीय भाषा षिक्षण के लिए उनके सिद्धांतों के अनुप्रयोग में समानताएँ हैं।

अब यह माना लिया गया है कि भाषा अर्जन अर्थोन्मुखी और सम्प्रेषणमुखी है। भाषा तब अर्जित नहीं की जाती है जब अंदर आने वाली जानकारियाँ दोहरायी जाती हैं, वरन् जब वह जानकारियाँ समझी जाती है और जब विद्यार्थी समझता है, कि इसका अर्थ क्या है? और वह इसका प्रयोग कर सकता है।

भाषा अर्जन के अनुसंधानकर्त्ताओं में से एक स्टीफन क्रेषेन ने इसे **बोधगम्य जानकारियाँ** कहा है। विद्यार्थी बाह्य जगत से प्रचुर जानकारियाँ प्राप्त करता है, परंतु केवल वही जानकारियों अर्जित की जाती है, जो विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य हो। क्रेषेन के अनुसार, विद्यार्थी के मस्तिष्क में निरीक्षक का भाव (मॉनीटर) होता है जो जानकारियों के निरीक्षण में सहायता करता है, और इसका तथा उस ज्ञान का साथ–साथ प्रयोग करता है जिसे पहले ही अर्जित किया गया है और तब परिणाम उत्पन्न करता है। बाद में निरीक्षक, अर्जित ज्ञान का प्रयोग करने वाले षिक्षार्थी को स्व–सुधार करने की अनुमति देता है। इस प्रकार निरीक्षक, बेहतर शुद्धता के लिए रूपांतरण करने की अर्जित प्रणाली को सुधारने या सही करने में सहायता करता है। निरीक्षक के कार्य करने के लिए जो भी आवष्यक है, वह उसका प्रभावी निष्यन्दक है। तब इसको जागृत किया जाता है तो यह सूचना को समझने की अनुमति देता है। यदि इसे सुप्त किया जाता है तो इससे जानकारियाँ समझ में आने में बाधा आती है। दबाव और चिंता जैसे कारक प्रभावकारी निष्यन्दक को कम कर सकते हैं। इसलिए दबावमुक्त वातावरण, भाषा अर्जन के लिए आवष्यक है।

अन्य अध्ययनों ने दिखाया है कि बोधगम्य जानकारियाँ, जिनका प्रयोग बच्चा कर सकता है, संरचनात्मक प्रकार की होती है। वयस्क, बच्चों से वयस्कों की तुलना में अधिक सरल भाषा में बात करते हैं। माँ बच्चे से सरलीकृत तरीके से विषेष भाषा में बातें करती हैं, जिसे कुछ लोगों द्वारा "**बाल सुलभ भाषा**" कहा जाता है। डि विलियर्स और डि वीलियर्स ने प्रौढ़ भाषा और बच्चों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के अंतरों को सारांषीकृत किया, जो निम्नलिखित है।

| विभिन्नता का स्तर | गुण |
|---|---|
| ध्वनि संबंधी (Phonological) | परिवर्तित तान (tone), दीर्घतर (उच्च) स्वराघात, अतिरंजित, स्पष्ट उच्चारण, मंदतर वाक्, विराम |
| वाक्य विन्यास (Syntactic) | लघुतर उक्ति, कम जटिल, न्यून अंतःस्थापन, कम खंडित वाक्य, पुनरावृत्ति, अधिक, विषयगत शब्द, कम कार्यात्मक शब्द, अधिक प्रष्न, अधिक आज्ञासूचक |
| शब्दार्थ विषयक (Semantic) | सीमित शब्दों का प्रयोग, मूर्त प्रसंगार्थ, अल्प अमूर्त पद, शब्दगत संबंधों का सीमित विस्तारक्षेत्र। |

ये अंतर स्पष्ट परिलक्षित होते हैं, जब वयस्क और बच्चे अंतःक्रिया करते हैं क्योंकि वयस्क (विषेषकर माताएँ) बच्चे के सीमित ज्ञान तथा परास के प्रति अधिकांषतः सजग रहते हैं और बच्चे के समझने के लिए वे भाषा को अधिक सरल बनाने का प्रयास करते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि प्रौढ–बाल भाषा में आदेषात्मक शब्द भरपूर होते हैं, क्योंकि अधिकांष नियमों का पालन करने के लिए कहा जाता है और यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो उन्हें हतोत्साहित किया जाता है। परंतु बच्चे वयस्कों की सामान्य भाषा को संयोग से या छिपकर सुनते हैं और शायद वे उसे अच्छी तरह समझ लेते हैं क्योंकि वे कभी–कभी अंतःक्रियाओं में ऐसी भाषा का प्रमाण दिखाते हैं। इसलिए भिन्न–भिन्न प्रकार की जानकारियों के बीच अंतर करना सदैव सरल या आसान नहीं होता है। भाषा में कुछ पद सरल प्रतीत होते हैं परंतु वे बाद में अर्जित किए जाते हैं जबकि अन्य पहले ही अर्जित कर लिए जाते हैं, उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में भूतकाल और कर्त्ता–क्रियापद अन्वय

व्याकरण के भाग है जो बाद में अर्जित किए जाते हैं। इनके बारे में अधिक विस्तार से हम अगली इकाई में पढ़ेंगे।

---

**बोध प्रश्न 3**

**टिप्पणीः** (क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) उपर्युक्त चर्चा के आधार पर आप चॉमस्की और पियाजे के दृष्टिकोण में क्या अंतर पाते हैं? उसका उल्लेख करें।

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

2) भाषा अर्जन में "निरीक्षक" (monitor) के क्या कार्य हैं?

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

..........................................................................................................................

3) भाषा अधिगम और अर्जन के संबंध में दिए गए स्पष्टीकरणों से आप क्या समझते हैं? दोनों में क्या अंतर है, अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

..........................................................................................................................................

## 5.6 सारांष

इस इकाई में हमने भाषा अधिगम और भाषा अर्जन पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। हमने चर्चा निम्नलिखित विषयों पर की है:

- अधिगम क्या है?
- अर्जन क्या है?
- भाषा विकास की प्रक्रिया

ये सभी हमें उन तरीकों को समझने में सहायता करते हैं जिनमें मानव भाषा जान सकता है तथा प्रयोग कर सकता है, और प्रक्रिया जिसके माध्यम से यह क्षमता प्राप्त की जाती है। कुछ प्रष्न आगे लिए जा सकते हैं: जैसे क्या बच्चे और वयस्क एक जैसी विधियों से सीखते हैं और क्या द्वितीय भाषा के अधिगम और/या अर्जन में वैसी ही प्रक्रिया का

अनुसरण किया जाता है जैसी प्रथम भाषा के अधिगम और/या अर्जन में किया जाता है? इन स्थितियों में से प्रत्येक की क्या अवस्थाएँ हैं?

## 5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) अनुकरण, पुनर्बलन, अनुकूलन, उद्दीपन अनुक्रिया, पुनरावृत्ति, आदत निर्माण

2) (i), (ii) और (iv) सही हैं।

   (iii) और (v) गलत हैं।

**बोध प्रश्न 2**

1) कृपया भाग 5.3 देखिए।

2) यह तर्क दिया जाता है कि बच्चे भाषा विकास की स्वाभाविक क्षमता के साथ जन्म लेते हैं। मानव मस्तिष्क में भाषा सीखने की स्वाभाविक क्षमता होती है। जब बच्चा बोलने के लिए तैयार होता है, उसमें भाषा संरचना के कुछ सामान्य सिद्धांत स्वतः कार्य करते हैं, जिनके लिए वह उन जानकारियों का परीक्षण करता है जिसे उसने अर्जित किया है। सिद्धांत बच्चे की **भाषा अर्जन युक्ति (Language Acquisition Device - LAD)** बनाता है।

**बोध प्रष्न 3**

1) कृपया भाग 5.5 देखिए।

2) क्रेषेन के अनुसार, अर्जन प्रणाली उच्चारण से प्रारंभ होती है जबकि अधिगम प्रणाली "निरीक्षक" (मॉनीटर) या "संपादक" की भूमिका निष्पादित करती है। निरीक्षक योजना, संपादन और सुधार प्रकार्य में कार्य करता है जब ये तीन विषिष्ट अनुकूलन मिलते हैं, तब द्वितीय भाषा विद्यार्थी के पास पर्याप्त समय होता है, कि वह शुद्धता पर ध्यान दे या सोचे और नियम जाने।

3) अर्जन का अर्थ अनुभवों के अवसरों के परिणामस्वरूप भाषा की प्रवीणता से है। दूसरी ओर, अधिगम का अर्थ दूसरी भाषा के सजग अध्ययन से प्राप्त भाषा की प्रवीणता से है।

## 5.8 पठनीय सामग्री


चॉमस्की, एन. (1959), "रिव्यू ऑफ बी. एफ. स्किनर, "बर्बल बिहेवियर", लैग्वेज, 35, 26—58

क्लार्क, एच. एवं क्लार्क ई. (1977) सायकोलॉजी एंड लैग्वेजः एन इंट्रोडक्षन टू साइकोलिंग्युंस्टिक्स" न्यूयार्क : हारकोर्ट ब्रेस जोवेनोविच

डि विलियर्स. जे. एवं डि विलियर्स पी. (1978), लैंग्वेज एक्वीसिषन, कैम्ब्रिज, मॉस, हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस क्रेषन, एस. (1976), फार्मल एंड इनफार्मल लिंग्यूस्टिक एनवायरमेंट्स इन लैंग्वेज एक्वीसिषन इन (TESOL), क्वाटर्ली 10, 157–168।

पियाजे, जे. (1926), *द लैग्वेज एंड थॉट ऑफ द चाइल्ड,* इंग्लिष संस्करण, लंदनः रुथलेज एवं कीगन पॉल।

स्किनर, वी.एफ., (1957), बर्बल बिहेवियर, न्यूयार्कः कॉपले पब्लिषिंग ग्रुप

श्लोविन, डी. (1973), कॉग्नीटिव प्री–रिक्विजिट्स फॉर दी डेवलेपमेंट ऑफ ग्रामर इन फरग्यूसन एंड श्लोविन, *स्टडीज ऑफ चाइल्ड लैंग्वेज एक्वोसिषन,* न्यूयार्क, होल्ट, रिनहार्ट एंड विक्सटन

वॉन डेर वीर, ऑर एंड वेल्सिवर जे. (संपा.) (1997), *दी व्यगोत्सकी रीडर,* ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल